किन्नर विमर्श के संदर्भ में सामाजिक दृष्टिकोण के बदलाव का प्रारंभ करता इक्कीसवीं सदी का भारतीय साहित्य

वैशाली चोपड़ा,

शोधार्थी, हिंदी विभाग, बीर तिकेन्द्रजीत विश्वविद्यालय, मणिपुर

शोध आलेख

किसी भी सभ्यता और संस्कृति के उत्थान–पतन के सारथी एकल रूप से उसके राजनैतिक, आर्थिक या ऐतिहासिक पहलू नहीं अपितु उसकी समूची ज्ञान परंपरा होती है। भारतीय उपनिषद, वेद, पुराण, ग्रंथ आदि इसी बात के साक्षी हैं। मनुष्य के पूर्ण और सभ्य बनने में ज्ञान सर्वाधिक अहम भूमिका निभाता है। आज हम सब एक सभ्य, सुशिक्षित तथा विकसित समाज का हिस्सा हैं अपनी समृद्ध ज्ञान परंपरा के कारण हैं।

परंतु इसी सभ्य समाज का एक समुदाय ऐसा है जो हमारे ज्ञान के दायरे से अभी भी परे है। समाज के परिदृश्य पर काली स्याही से खुदा है 'हिजड़ा समुदाय' सबसे विवादास्पद समुदायों में से एक है जिसके अस्तित्व को मानवता के धरातल पर झुठलाकर मनुष्य की श्रेणी से ही दरकिनार कर दिया गया है। पर सवाल यह उठता है कि क्या सदा से यह समुदाय उपहास का पात्र या समाज का बहिष्कृत हिस्सा रहा है? क्या भारतीय संस्कृति के निर्माण में इस समुदाय का कोई योगदान नहीं रहा है? क्या सदा से यह समुदाय हाशिये पर रह सांस्कृतिक व सामाजिक अलगाव का तिरस्कार झेलता आया है? और क्या सचमुच यह समुदाय हम सबकी तल्खी और बेरुखी का हकदार है?? आज इन्हीं चंद सवालों पर चिंतन मनन हेतु मैं आपके समक्ष अपने कुछ विचार लेकर प्रस्तुत हुई हूँ।

जब से मानव जाति का पदार्पण इस धरती पर हुआ है, तब से केवल नर या नारी ही नहीं इन दोनों के इतर एक तीसरा लिंग भी अस्तित्व में रहा है। आदिकाल से द्वापरयुग के महाभारत और त्रेता युग के रामायण में भी किन्नरों की स्वीकृत सामाजिक उपस्थिति के पुख्ता सुबूत मिलते हैं। भगवन शिव द्वारा अर्धनारीश्वर रूप धारण करना हो या श्री कृष्ण द्वारा नारी रूप धारण कर अर्जुन व उलुपी के पुत्र अरावन से विवाह करना हो। महाभारत में अर्जुन का 'बृहन्नला' बनकर अज्ञातवास काटना हो या 'शिखंडी' के नारी रूप में पैदा होने तथा पुरुष रूप में पलने की कथा का वर्णन हो। कालिदास के 'कुमारसंभव' में किन्नरों का मनोहारी वर्णन या तुलसीदास जी के राम द्वारा वनवास से लौटने पर तृतीय लैंगिकों से मुखातिब हो उनकी अनवरत भक्ति से अभिभूत हो उन्हें वरदान देने के प्रसंग इस बात का सुबूत है कि उभयलेंगिकों को समाज में निश्चित तौर पर एक स्वीकृत स्थान प्राप्त था। अजंता की गुफाओं में किरात और किन्नरों के भित्तिचित्रों से लेकर मिस्र, बेबीलोन, मोहनजोदाड़ों की सभ्यता में भी इनकी मौजूदगी के प्रमाण मिलते हैं। भारत में सत्पथ ब्राह्मण, जैन, बौद्ध धर्म ग्रंथों से लेकर लोक कथाओं तक में किन्नर समाज का निरंतर जिक्र मिलता है। वात्स्यायन कृत 'कामसूत्र' तथा संस्कृत नाटकों में भी इनका जिक्र कौटिल्य के अर्थ शास्त्र में किया गया है। मुगलकाल में तो किन्नरों को विभिन्न उच्च पदों पर आसीन होने के अधिकार प्राप्त थे। अलाउद्दीन खिलजी का सेनापति 'मलिक काफुर' किन्नर समुदाय से ही आता है। दरबारों व मंदिरों में अपनी नृत्य कला से वाह–वाही लूटने के

अनेक उदाहरण इतिहास व मिथकों में किन्नर समाज की मौजूदगी के ही प्रमाण देते हैं।

परंतु ब्रिटिश प्रशासन काल के आने पर किन्नरों की स्थिति दयनीय होती चली गई। अंग्रेजों ने इन्हें 'क्रिमिनल ट्राइब्स जनजाति की श्रेणी में डालकर सभी मानवाधिकारों से वंचित कर दिया। यदपि भारतीय संविधान में इन्हें क्रिमिनल ट्राइब्स के कलंक से तो मुक्त कर दिया परंतु उनके उत्थान के लिए कोई विशिष्ट विकल्प नहीं सुझाए गए। जिसकी परिणति इस विडंबना के रूप में दिखाई देती है कि आज उनके 'मानव' होने की सार्थकता पर ही प्रश्न चिह्न खड़ा कर दिया गया है। आज किन्नर समाज अपने साथ होते अमानुषिक व्यवहार के चलते अपनी पहचान व अधिकारों के लिए तरसता दिखाई देता है। 'पितृसत्तात्मक' मानसिकता के ठेकेदारों तथा 'लैंगिक–पूजकों' ने इन्हें अजनबी ही नहीं अवांछित बना दिया है। समाज की दोगली सोच इस बात से भी साबित होती है कि एक मानसिक या शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्ति को समाज का हिस्सा मानकर 'Inclusion' के नाम पर न केवल उनके अधिकारों की बात की जाती है अपितु उन्हें 'Specially abled' 'Person with special needs' या 'Differently abled' जैसे नामों से संबोधित कर इस बात का खास ख्याल रखा जाता है कि उनकी भावनाओं को किसी प्रकार ठेस न पहुँचे। मित्रवर! इस बात का जिक्र करने के पीछे मेरा उद्देश्य इस अभ्यास पर तंज कसना कतई नहीं है अपितु आप सब बुद्धिजीवियों के मन–मस्तिष्क में तृतीय लिंगी समुदाय के प्रति संवेदनशीलता व सम्मान की भावना का बीज बोना मात्र है। वैसे तो जीवन के लिए हम तीन अवयवों को अनिवार्य मानते हैं रोटी, कपड़ा और मकान। परंतु इन सबसे जरूरी अवयव को हम कैसे भूल सकते हैं। 'प्यार'। जी हाँ! व्यक्ति बिना छत के जिंदा रह सकता है परंतु 'प्यार' के बिना कतई नहीं। अपनी लैंगिक विकलांगता के कारण समाज इन्हें हेय मानकर जिस प्रकार इनका परित्याग करता है, भूल जाता है कि वह अपने इस व्यवहार से इस समूचे समाज को उस दोष की कभी ना खत्म होने वाली ऐसी सजा देता है जिसकी परिणति असीम कुंठा, हीनता, उदासीनता व आक्रोश को ही जन्म देती है। समाज द्वारा त्याज्य यह समुदाय अकेलेपन का शिकार बन भिक्षावृत्ति या वैश्यावृत्ति के सहारे अपना जीवन यापन करने को मजबूर हो जाता है।

21 वीं सदी के अनेक लेखक–लेखिकाओं ने इस समुदाय को अपनी लेखनी का केंद्र बनाया है। ऐसा नहीं है कि इससे पहले किन्नरों पर लिखा नहीं गया है। परंतु भले ही वह उपन्यास हो, कहानी हो, या फिर नाटक या फिल्मांकन हो, उन्हें 'मानव' स्वरूपा न दर्शा कर मात्र पात्र के रूप में दर्शाया गया है। ऐसा पात्र जो फूहड़ है, हास्यास्पद है या डरावना है। और यही कारण है आज समाज में इस वर्ग के लोगों को उसी

दृष्टिकोण से देखा जाता है। हमने कभी उनके ष्ब्अमत जीम जवचष तथा ष्सवनक उंामनचष के पीछे धड़कता स्नेहमयी दिल देखने की कोशिश ही नहीं की। हमने पेड़–पौधों, जानवरों यहाँ तक कि पत्थरों से बनी मूर्तियों को भी अपने दिल में बेपनाह मोहब्बत दी है परंतु उसी भगवान की बनाई इस कृति के प्रति इतनी उदासीनता क्यों!! हमें मात्र अपनी दृष्टि बदलने की आवश्यकता है निगाहों में प्रेम व सम्मान का सुरमा भर कर देखिए तो जनाब! यही मर्दानी आवाज वाले ताली पीटते लोग अपने से लगने लगेंगे। सुर्खी–बिंदी व पाउडर से पुते चेहरों के पीछे एक स्नेहमयी दिल धड़कता दिखाई देने लगेगा।

आज का दौर अस्मिता का दौर है। जहाँ एक ओर स्त्री, दलित, आदिवासी, वृद्ध आदि विमर्श अपनी पहचान बनाने में लगे हैं जो एक सीमा तक सफल भी हुए हैं वहीं किन्नर समाज आज भी अपनी अस्मिता के लिए जूझता दिखाई

दे रहा है। इक्कीसवीं सदी के विभिन्न साहित्यकारों ने खुलकर इस समुदाय का जीवंत चित्रण किया है। ऐसे में नीरजा माधव के 'यमदीप' का जिक्र न होना स्वतंत्रता संग्राम में 'गांधी जी' का जिक्र न किए जाने के समान होगा। इस उपन्यास ने हिन्दी साहित्य जगत में एक ऐसी हलचल पैदा कर दी जिसने समकालीन साहित्यकारों को, समाज, यहाँ तक कि सरकार को भी उभयलैंगिकों के अभिशप्त जीवन पर विचार–विमर्श करने के लिए बाधित कर दिया। फिर तो हुजूर प्रदीप सौरभ का 'तीसरी ताली', महेंद्र भीष्म का 'किन्नर कथा' तथा 'मैं पायल', निर्मला भुराड़ीया का 'गुलाम मंडी', चित्रा मुद्गल का 'पोस्ट बाक्स नंबर–203 नाला सुपारा', भगवंत अनमोल का 'जिंदगी 50–50', लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी का 'मैं हिजड़ा..मैं लक्ष्मी', अनुसूया त्यागी का 'मैं भी औरत हूँ' मोनिका देवी का 'अस्तित्व की तलाश में सिमरन' और हाँ, मैं किन्नर हूँ' जैसे अनेक युगप्रवर्तक उपन्यास सामने आए जिनमें इन साहित्यकारों ने किन्नरों के जीवन में झांक कर उनकी सामाजिक समस्याओं, यातनाओं और संघर्षों की कहानियों को जन–जन तक पहुँचाया। हजारीप्रसाद द्विवेदी जी ने कहा था, ''साहित्य के माध्यम से विमर्शों ने अपनी अस्मिता की पहचान की है।'' बस उपन्यासकारों के ये प्रयास रंग लाए और अप्रैल 2014 में सर्वोच्च न्यायालय ने किन्नरों के अधिकारों तथा समावेशन को ध्यान में रखते हुए इन्हें 'तृतीय लिंग' का दर्जा प्रदान किया। परंतु दिल्ली अभी दूर है। जब तक हमारे समाज के अन्य वर्गों की भांति किन्नर समुदाय को भी समान शिक्षा, रोजगार, व स्वास्थ्य संबंधी सभी अधिकार प्राप्त नहीं होंगे तब तक यह लड़ाई जारी रहेगी। क्योंकि जब तक समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने पूर्वाग्रहों से निकलकर इन्हें खुले दिल से नहीं अपनाएगा तब तक हमारे इन बंधुओं के मानवाधिकारों का सच्चा विकास नहीं हो पाएगा।

आधार ग्रंथ

1) यमदीप : नीरजा माधव, सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली, ससंकरण–2009
2) तीसरी ताली : प्रदीप सौरभ, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2011
3) किन्नर कथा : महेंद्र भीष्म, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2016
4) गुलाम मंडी : निर्मला भुराड़िया, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2014
5) पोस्ट बॉक्स न. 203 नाला सुपारा : चित्रा मुद्गल, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2016
6) मैं पायल : महेंद्र भीष्म, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण–2016
7) मैं भी औरत हूँ : डॉ. अनुसूया त्यागी, परमेश्वरी प्रकाशन, नई दिल्ली

सहायक ग्रंथ

1) विमर्श का तीसरा पक्ष, डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह, रवि कुमार गौड़, अनंग प्रकाशन
2) हिन्दी साहित्य का विकास, मधुरेश, लोक भारती प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण–2011
3) थर्ड जेंडर : अतीत और वर्तमान, संपादक : डॉ. एम. फिरोज खान
4) हिन्दी उपन्यासों के आईने में थर्ड जेंडर, डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण–2017
5) सामान्य मनोविज्ञान, डॉ.प्रीति वर्मा, डॉ. डी. एन. श्रीवास्तव, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, चौदहवाँ संस्करण–2007

पत्रिकाएँ

1) जनकृति : (थर्ड जेंडर विशेषांक) भारत में किन्नरों कि सामाजिक स्थिति और मान्यता–कुमार गौरव कुमार अगस्त–2021

2) जनकृति : (थर्ड जेंडर विशेषांक) हिन्दी उपन्यास और किन्नर समुदाय का संघर्ष–शशांक त्रिपाठी, जून–2021

3) जनकृति : (थर्ड जेंडर विशेषांक) संघर्ष की दास्तान वाया थर्ड जेंडर, डॉ. आलोक कुमार सिंह, सितंबर–2020

4) जनकृति : (थर्ड जेंडर विशेषांक) किन्नर जीवन, एक दर्द भरी दास्तान, पूजा सचिन धारगलकर, जुलाई–2020